तूफ़ान में जीवित बचना
(27:21-28:2)

अपने साथियों के साथ किनारे-किनारे कैसरिया से उत्तर की ओर पौलुस की रोम की समुद्री यात्रा के आरम्भ में कोई घटना नहीं घटी। परन्तु, सैदा से निकलकर पश्चिम की ओर जाने की कोशिश करते समय विपरीत हवाओं ने ज़ोर पकड़ लिया था। कई सप्ताह बाद थोड़ा आगे निकलकर, वे क्रेते के टापू में दक्षिण की ओर बह गए, जहां उन्हें शुभलंगरबारी में थोड़ी देर के लिए आश्रय मिला। जब उन्होंने किसी अन्य उपयुक्त बन्दरगाह तक जाने की कोशिश की तो वे ऐसे तूफ़ान में फंस गए, जो खत्म होता दिखाई नहीं दे रहा था। द अपोस्टल: *ए लाइफ़ ऑफ़ पॉल,* में जॉन पोलोक ने लिखा:

> उन कष्टदायक दिनों, और ख़तरनाक रातों में, वे पर्वताकार लहरों में उठते और गिर जाते थे। घने काले बादल कुछ भी सोचने नहीं दे रहे थे: जहाज़ के कप्तान को जहाज़ की स्थिति का पता नहीं चल रहा था ... गेहूं का मुख्य सामान पूरी तरह से जहाज़ को पानी में डुबो रहा था क्योंकि बोरियां भीगकर इतनी भारी हो चुकी थीं कि डूब रहे जहाज़ में हिल भी नहीं सकती थीं, और उनका भार बढ़ता ही जा रहा था।
>
> तूफ़ान के ग्यारहवें या बारहवें दिन तक जलस्तर ऊपर आता जा रहा था, जहाज़ नीचे जाता था और ''बचने की सारी आशा जाती रही थी।'' साफ लग रहा था कि पानी भरने से जहाज़ किसी भी समय डूब सकता है, तूफ़ान कम भी हो जाता तो भी अधिक से अधिक कुछ ही दिनों की बात थी और यदि वे जहाज़ को छोड़ देते तो इसका अर्थ होता कि सब लोगों का नाश।

आप में से बहुत से लोग अनुमान लगा सकते हैं कि इस विकट परिस्थिति में उन्हें कैसा लग रहा था। तूफ़ान हर किसी के जीवन में आते हैं। हर किसी के जीवन में घरेलू तूफ़ान, आर्थिक तूफ़ान या व्यावसायिक तूफ़ान आया होगा, आ रहा है, या आएगा। डॉक्टर से बुरी रिपोर्ट मिलने पर, बच्चों द्वारा हमारे विश्वास को तोड़ने पर या धोखा मिलने पर हमारे अन्दर तूफ़ान बड़े ज़ोर से आते हैं। आप में से कई लोग जानते हैं कि उम्मीद छोड़ने का क्या अर्थ है।

पौलुस की रोम यात्रा की कहानी को आरम्भ करते समय, हमने विपरीत हवाओं और तूफ़ान पर ज़ोर दिया था। अब आइए देखें कि कैसे पौलुस तूफ़ान से बचा और आप अपने

जीवन के तूफ़ानों से कैसे बच सकते हैं। जब तूफ़ान आपके जीवन में आएं, तो आपको पता होना चाहिए कि आप अकेले नहीं हैं!

सम्भावना की अपेक्षा करें[1]

जीवन के तूफ़ानों से बचकर निकलना हो, तो आपको इस सच्चाई के लिए मानसिक तौर पर तैयार रहना चाहिए कि तूफ़ान तो आएंगे ही। यद्यपि पौलुस वहीं था जहां उसे होना चाहिए था अर्थात वह यीशु के नाम की गवाही के लिए रोम के मार्ग में था, फिर भी विपरीत हवाएं चलीं। अन्ततः, तूफ़ान आ गया। धर्मी हो या अधर्मी वर्षा दोनों पर ही गिरती है (मत्ती 5:45); तूफ़ान भले और बुरे दोनों तरह के लोगों पर आते हैं। तूफ़ानों के आने का अर्थ यह नहीं कि परमेश्वर ने आपको छोड़ दिया है; वे तो जीवन का एक भाग हैं, जो कभी-कभी आपको और संवारने के लिए परमेश्वर की योजना का भाग होते हैं। यदि वे आपको झुकने के लिए मजबूर करते हैं, तो शायद आपको झुकने की ही आवश्यकता है।

प्रतिज्ञाओं को व्यक्त करें (27:21-26)

जब निराशा ने पौलुस को झुकने के लिए मजबूर कर दिया, तो वह प्रार्थना करने लगा। निराशा की रात में उसे परमेश्वर की ओर से एक प्रतिज्ञा मिली। हम कहानी को अगली सुबह की ओर ले जाते हैं जहां प्रेरित को आशा के संदेश को दूसरे लोगों में सुनाने की जल्दी थी: ''तो पौलुस ने उनके बीच में खड़ा होकर कहा; हे लोगो, चाहिए था कि तुम मेरी बात मानकर, क्रेते से न जहाज खोलते और न यह बिपत और हानि उठाते'' (आयत 21ख)। पौलुस का उद्देश्य उन्हें डांटना नहीं बल्कि उनसे यह आग्रह करना था कि उसी गलती को वे दोबारा न करें। फिर तूफ़ान की गड़गड़ाहट से भी ऊंचे स्वर में उसके आशा भरे इन शब्दों की गूंज आई:

> परन्तु अब मैं तुम्हें समझाता हूं, कि ढाढ़स बान्धो; क्योंकि तुम में से किसी के प्राण की हानि न होगी, केवल जहाज की। क्योंकि परमेश्वर जिस का मैं हूं, और जिस की सेवा करता हूं, उसके स्वर्गदूत[2] ने आज रात मेरे पास आकर कहा। हे पौलुस मत डर; तुझे कैसर के साम्हने खड़ा होना अवश्य है:[3] और देख, परमेश्वर ने सबको जो तेरे साथ यात्रा करते हैं, तुझे दिया है। इसलिए, हे सज्जनों ढाढ़स बान्धो; क्योंकि मैं परमेश्वर की प्रतीति करता हूं, कि जैसा मुझ से कहा गया है, वैसा ही होगा (आयतें 22-25)।

स्पष्टतः पौलुस न केवल अपनी सुरक्षा के लिए, बल्कि जहाज़ के सभी लोगों की सुरक्षा के लिए प्रार्थना कर रहा था और परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना का उत्तर भी दिया।[4] जब आप तूफ़ान के बीच घिरे हों तो याद रखें कि जीवन में केवल आप ही परेशान नहीं हैं (1 कुरिन्थियों 10:13क)। अपने साथ-साथ दूसरों के लिए भी प्रार्थना करें (याकूब 5:16); आत्मकेन्द्रित होने से बढ़कर कोई और वस्तु आदमी को डुबो सकती।

परमेश्वर की प्रतिज्ञा में अच्छी खबर भी थी और बुरी भी अर्थात उनके प्राण तो बचाये जाने थे, परन्तु जहाज डूब जाना था। पौलुस ने आगे कहा, ''परन्तु हमें किसी टापू पर जा टिकना होगा'' (आयत 26)। परमेश्वर ने वायदा किया कि वे बच जाएंगे, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं था कि वे आसानी से बच जाएंगे। कठिन समय आने वाला था, परन्तु परमेश्वर की प्रतिज्ञा ने उन्हें जीवित रखना था।

परमेश्वर के पास हमारे लिए भी आशा का एक संदेश है। आपको और मुझे पौलुस की तरह स्वर्गदूत का दर्शन नहीं होगा, परन्तु हमारे पास परमेश्वर की ''बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएं'' हैं (2 पतरस 1:4; इब्रानियों 8:6 भी देखिए) और उसका संदेश वही रहता है कि ''हियाव बांध'' (भजन संहिता 27:14; यूहन्ना 16:33)! समस्या यह नहीं कि प्रभु ने हमें बिना आश्वासन के छोड़ दिया है।[5] समस्या यह है कि बहुत बार हमारे अन्दर पौलुस की तरह विश्वास नहीं होता जिसने कहा, ''मैं परमेश्वर की प्रतीति करता हूं, कि जैसा मुझ से कहा गया है, *वैसा* ही होगा'' (प्रेरितों 27:25क; यूहन्ना 20:27 भी देखिए)।

जीवन के तूफ़ानों से बच निकलने के लिए हमें परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को व्यक्त करने की आवश्यकता है। पहला, हमें अपने मनों और हृदयों पर उन्हें छापने के लिए बार-बार अपने आपको वे वायदे याद कराने होंगे। हमें उन्हें लिखकर ऐसी जगह पर लगाना होगा जहां से हम उन्हें हर रोज़ देख सकते हों। फिर, जैसे पौलुस ने कहा, हमें उन प्रतिज्ञाओं को दूसरों को भी बताना होगा।

उन प्रतिज्ञाओं को दूसरों को बताने से क्या हमारी समस्याएं धुएं की तरह अलोप हो जाएंगी? सम्भवत: नहीं। पौलुस द्वारा परमेश्वर के आशा के संदेश की घोषणा से समुद्र शांत नहीं हुआ था। बादल छंटे नहीं थे कि नाविक अपनी दिशा की ओर मुड़ पाते। बाहर से कुछ भी नहीं बदला था; तूफ़ान और तेज़ होता गया। बदलाव *भीतर* से अर्थात व्यवहार में हुआ था। निश्चय ही इस बदलाव ने पौलुस के लिए और उनके लिए जिन्होंने विश्वास किया, दुनिया ही बदल दी। जब आप और मैं जीवन के तूफ़ानों में प्रभु के वायदों पर भरोसा रखते हैं, तो बाहर से कुछ नहीं बदलता; परिस्थितियां लगभग वैसी ही रहती हैं। वास्तविक बदलाव अन्दर से होता है अर्थात हमें ''परमेश्वर की शांति, जो समझ से बिल्कुल परे है'' (फिलिप्पियों 4:7क) का पता चलता है!

उपस्थिति दिखाएं (27:27-37)

स्वर्गदूत ने पौलुस को बताया था कि जहाज़ ''किसी टापू पर जा टिकेगा'' (आयत 26)। वह वहां से जहां पहले तूफ़ान ने उन्हें घेरा था पांच सौ या अधिक मील दूर पश्चिम की ओर मिलिते अर्थात मालटा ''टापू'' था (28:1)। पृष्ठ 191 पर मानचित्र देखिए; मिलिते भूमध्य सागर में एक बिन्दु है। इधर-उधर डोलते हुए (27:27), वह जहाज़ भूमि के उस छोटे से टुकड़े पर कैसे रुका होगा? परमेश्वर उसका नाविक था। इसलिए परमेश्वर उसी हवा को इस्तेमाल कर रहा था जिसने जहाज़ और इसके यात्रियों को मंज़िल

तक ले जाने के लिए विनाश के ख़तरे में डाला था (रोमियों 8:28)। परमेश्वर अपनों को नहीं छोड़ता; वह उनके जीवनों में हमेशा कार्य करता रहता है।

''जब चौदहवीं रात हुई, और हम अद्रिया समुद्र[6] में टकराते फिरते थे, तो आधी रात के निकट मल्लाहों ने अटकल से जाना, कि हम किसी देश के निकट पहुंच रहे हैं'' (आयत 27)। उन्हें सागर के किनारे लहरों की आवाज़ सुनाई दी होगी। ''और थाह लेकर[7] उन्होंने बीस पुरसा [120 फुट] गहरा पाया और थोड़ा आगे बढ़कर फिर थाह ली, तो पन्द्रह पुरसा [90 फुट] पाया'' (आयत 28)। उन्हें और अच्छी/बुरी ख़बर मिल गई: अच्छी ख़बर यह थी कि वे किनारे तक पहुंच रहे थे; बुरी खबर यह थी कि अन्धेरे में खतरे का पता नहीं चल पा रहा था। ''तब पथरीली जगहों पर पड़ने के डर से उन्होंने जहाज की पिछाड़ी चार लंगर[8] डाले'' (आयत 29क)। आम तौर पर, लंगर जहाज़ के बो (अग्रभाग) से डाले जाते थे, पिछाड़ी से नहीं। परन्तु, हवा धरती की ओर चलने के कारण, उन्होंने लंगर वहां पर डाले जहां तूफ़ान इसे किनारे की ओर रखता।

जहाज़ को बचाने के लिए पूरी कोशिश करने के बाद, वे ''भोर का होना मनाते रहे'' (आयत 29ख)। मूलत:, ''उन्होंने दिन के लिए प्रार्थना की।'' हो सकता है, कि अन्धेरे में ख़तरे का अहसास होने पर, परमेश्वर के बहुत दूर और यह लगने पर कि रात कभी खत्म नहीं होगी आपकी रातें भी बड़ी कठिनता से बीती हों।

रात को कई बार, सहमे हुए नाविक तनाव में आ गए होंगे। वे जहाज़ के साथ रहने के नियम भूल गए; उन्हें अपने सिवाय किसी का ध्यान नहीं रहा। किनारे पर पहुंचना तो तूफ़ानी अंधेरे में किसी प्रकार भी सम्भव नहीं था ''मल्लाहों ने जहाज़ पर से भागने'' के लिए ''गलही से लंगर डालने के बहाने डोंगी समुद्र में उतार दी'' (आयत 30)।

पौलुस, जो डैक पर ही था, को जहाज़ों और तूफ़ानों का इतना अनुभव था कि वह मल्लाहों की पहेली में नहीं फंसा। जहाज़ के अग्रभाग से लंगर डालने की आवश्यकता नहीं थी क्योंकि पहले ही उसकी पिछाड़ी से लंगर डाला हुआ था, इससे जहाज़ को ख़तरा भी हो सकता था। इसलिए ''जब मल्लाह जहाज पर से भागना चाहते थे ... तो पौलुस ने सूबेदार और सिपाहियों से कहा; यदि ये जहाज पर न रहें, तो तुम नहीं बच सकते'' (आयत 30, 31)। अगले दिन जहाज़ को चलाने के लिए मल्लाहों के न होने से, उनके जीवित रहने की बहुत कम उम्मीद थी।[9] सिपाहियों ने जल्दी से ''रस्से काटकर डोंगी गिरा दी'' (आयत 32), जिससे भागने की और कोशिश समाप्त हो गई।[10]

रात के बढ़ने से, जहाज में मौजूद सब लोगों का विश्वास क्षीण होने लगा; जब अनुभवी मल्लाह ही डर गए थे, तो क्या सभी भयभीत नहीं हुए होंगे? भोर होने से थोड़ा पहले, पौलुस ने, उन्हें जोश दिलाने के लिए तीन सूत्रीय कार्यक्रम देकर फिर से काम सम्भाल लिया:

पहला कदम उन्हें तगड़ा करना था क्योंकि जो शरीर को प्रभावित करता है आत्मा उससे प्रभावित होती ही है:[11] उसने यह कहते हुए उन, ''सबको भोजन करने को समझाया, कि आज चौदह दिन हुए कि तुम आस देखते-देखते भूखे रहे, और कुछ भोजन न किया।

इसलिए तुम्हें समझाता हूं, कि कुछ खा लो, जिस से तुम्हारा बचाव हो'' (आयतें 33क, 34)। अन्य शब्दों में, ''जीवित रहने के लिए तुम्हें शक्ति चाहिए।''

दूसरा कदम उनकी आत्माओं को मजबूत करना था क्योंकि जो आत्मा को प्रभावित करता है उससे शरीर भी प्रभावित होता है:[12] उसने उन्हें फिर से यह आश्वासन देते हुए परमेश्वर का वायदा याद दिलाया कि ''तुम में से किसी के सिर का एक बाल भी न गिरेगा''[13] (आयत 34ख)।

तीसरा कदम शायद सबसे महत्वपूर्ण था: उसने दिखाया कि *उसे* वायदे पर भरोसा था; उसने दिखाया कि *उसे* सचमुच विश्वास था कि परमेश्वर उनके साथ है। ''और यह कहकर उसने रोटी लेकर सब के साम्हने परमेश्वर का धन्यवाद किया; और तोड़कर खाने लगा'' (आयत 35)।[14] पौलुस के शांत होने से वे उतने ही प्रभावित हुए थे जितने मल्लाहों के भय से: ''तब वे सब भी ढाढ़स बान्धकर भोजन करने लगे'' (आयत 36)। कितना अद्‌भुत दृश्य था वह: एक मामूली मिशनरी भोर से पहले तीन मसीहियों और 273 अन्य जातियों के लिए परोसे गए नाश्ते के लिए परमेश्वर का धन्यवाद कर रहा था![15] इस प्रकार उसने उनके प्राणों को दृढ़ किया क्योंकि जो प्राण को प्रभावित करता है उससे देह और आत्मा भी प्रभावित होते हैं।

यदि हमें तूफ़ान से बचकर निकलना हो, तो पौलुस की तरह अपने जीवनों में परमेश्वर की उपस्थिति का प्रदर्शन करना आवश्यक है।[16] हमारे जीवन से लोगों को पता चलना चाहिए कि हम परमेश्वर के वायदों में विश्वास करते हैं और चाहे कुछ भी हो जाए, हमें पूरा भरोसा है कि वह हमें छोड़ता नहीं है। पौलुस के साथ हम भी कह सकते हैं, ''हम ... कलेश तो भोगते हैं, पर संकट में नहीं पड़ते; निरुपाय तो हैं, पर निराश नहीं होते। सताए तो जाते हैं; पर त्यागे नहीं जाते; गिराए तो जाते हैं, पर नाश नहीं होते'' (2 कुरिन्थियों 4:8, 9)।

योजना को पूरा करें (27:38-44)

तूफ़ान में पौलुस के व्यवहार पर विचार करके मैं उसकी व्यावहारिकता से प्रभावित होता हूं। परमेश्वर ने वायदा किया था कि जहाज पर सवार सभी लोग बचाए जाएंगे, परन्तु पौलुस ने विश्वास नहीं किया जिससे उसे वह सब करने में छूट मिल गई जो वह कर सकता था अर्थात जब सब लोग उदास थे, तो उसने जहाज पर बैठे सब लोगों को उत्साहित किया। जब जहाज़ चलाने के लिए मल्लाहों की आवश्यकता थी, तो उसने उन्हें जहाज़ छोड़कर जाने से मना किया। जब जहाज़ पर सवार सभी लोग थक चुके थे, तो उसने उनसे भोजन करने का आग्रह किया। तूफ़ानों का सामना होने पर हमें परमेश्वर की योजना का प्रदर्शन करना चाहिए चाहे वह कैसी भी हो। हमें वही करना चाहिए जो तूफ़ान से बचने के लिए *हम* कर सकते हैं।

नाविक दल को भोजन करने से, शक्ति मिली और उनकी उम्मीद फिर से जाग उठी। वे भोर के लिए तैयारी करने लगे। ''जब वे भोजन करके तृप्त हुए, तो गेहूं को समुद्र में

फेंक कर जहाज हल्का करने लगे'' (आयत 38)। उन्होंने जहाज़ पर से बचा हुआ सब सामान फैंक दिया (देखिए आयत 18), ताकि जहाज़ पानी पर थोड़ा ऊपर उठ सके और किनारे-किनारे चल सके।

अगली आयत ''जब बिहान हुआ, ...'' से आरम्भ होती है (आयत 39क)। बुरी रातें बीत जाती हैं। ''जब बिहान हुआ, तो उन्होंने उस देश को नहीं पहिचाना, परन्तु एक खाड़ी देखी जिस का चौरस किनारा था,[17] और विचार किया, कि यदि हो सके, तो इसी पर जहाज को टिकाएं'' (आयत 39)। किनारा तो दिखाई दे रहा था, परन्तु अभी भी वे सुरक्षित नहीं थे।

तैयारी जारी रखते हुए, नाविक दल ने तीन काम किए: (1) उन्होंने चार लंगरों को फैंक कर ''समुद्र में छोड़ दिया,'' क्योंकि उन्हें उनकी दोबारा आवश्यकता नहीं पड़नी थी (आयत 40क)। (2) ''और उसी समय पतवारों के बन्धन खोल दिए'' (आयत 40ख)। पुराने जहाज़ों में अक्सर दो स्टेयरिंग पैडल या पतवार होते थे जो पिछाड़ी के प्रत्येक कोने में एक डण्डे से जुड़े होते थे जहां से एक मल्लाह जहाज का प्रबन्ध कर सकता था। तूफ़ान के समय, इन पतवारों को पानी से ऊपर उठाकर बांध दिया जाता था। अब उन्हें खोल दिया गया, ताकि जहाज़ चल सके। (3) उन्होंने जहाज़ को आराम से चलाने के लिए और कुछ हवा के धक्के देने के लिए ''हवा के साम्हने अगला पाल'' रस्से से चढ़ा दिया (आयत 40ग)।[18]

वे पूरी तरह से तैयार थे, इसलिए वे ''किनारे की ओर चले'' (आयत 40घ)। उम्मीद तो उन्हें किनारे के पास पहुंचने की थी, ''परन्तु दो समुद्र[19] के संगम की जगह पड़कर उन्होंने जहाज को टिकाया'' (आयत 41क)। ''गलही [जहाज़ के आगे का भाग] तो धक्का खाकर गड़ गई, और टल न सकी; परन्तु पिछाड़ी लहरों के बल से टूटने लगी'' (आयत 41ख)।

जहाज़ के टूटने से फिर भय छा गया। इस बार मल्लाह नहीं, बल्कि सिपाही डर गए थे। सैनिक नियम था कि यदि कोई कैदी भाग जाए, तो उसकी निगरानी के लिए ज़िम्मेदार सिपाही को उस कैदी का दण्ड दिया जा सकता था।[20] इस गड़बड़ी में कुछ कैदी निकलकर भाग सकते थे, और कोई भी सिपाही ''शेर का निवाला''[21] नहीं बनना चाहता था, इसलिए ''सिपाहियों का यह विचार हुआ, कि बन्धुओं को मार डालें; ऐसा न हो, कि कोई तैरकर निकल भागे'' (आयत 42)। उन्होंने अन्य कैदियों के साथ पौलुस को भी मार देने की योजना बनाई।

पौलुस की ओर सिपाहियों द्वारा हत्या के इरादे से देखने से, उसका जीवन फिर से तराजू में लटक गया परन्तु प्रभु ने उससे वायदा किया था कि वह कैसर के सामने खड़ा होगा। इस बार परमेश्वर ने सूबेदार यूलियुस के माध्यम से दखल दिया। स्पष्टत:, इस रोमी अधिकारी को पौलुस के साथ विशेष व्यवहार करने का निर्देश तो मिला ही था, परन्तु वह इस कठिन घड़ी में उसके आचरण से प्रभावित भी हो गया था। इस कारण, ''सूबेदार ने पौलुस को बचाने की इच्छा[22] से उन्हें इस विचार से रोका''[23] (आयत 43क)। (आपके

जीवन के तूफ़ानों के समय, कई बार राहत अप्रत्याशित स्रोतों से आ जाती है।)

यूलियुस ने जल्दी से सबको जहाज़ को छोड़ देने के आदेश दे दिए। उसने ''कहा, कि जो तैर सकते हैं, पहिले कूदकर किनारे पर निकल जाएं।[24] और बाकी कोई पटरों पर, और कोई जहाज की और वस्तुओं के सहारे निकल जाएं''[25] (आयतें 43ख, 44क)।

आपको क्या लगता है कि पौलुस ने विरोध करके कहा होगा, ''एक मिनट रुको! तुम जानते हो कि मैं उस ठण्डे तूफ़ानी जल में नहीं कूदने वाला। जानते हो? प्रभु ने मुझसे वायदा किया है कि मैं बच जाऊंगा! प्रभु ने मुझ से वायदा किया है कि मैं रोम में पहुंच जाऊंगा! जब तक प्रभु मुझे बचाता नहीं मैं तो यहां से नहीं हिलूंगा''? मुझे नहीं लगता है कि पौलुस जल में कूदने वालों में सबसे पहला होगा! मैं उसे लहरों से जूझते हुए, तैरते हुए (या टूटे हुए जहाज़ के एक टुकड़े को पकड़े), पानी से अपना सिर बाहर रखने की कोशिश करते, खारे पानी में सांस रोकते, किनारे की ओर आने की कोशिश करते हुए देखता हूं जब तक अन्त में वह थककर हांफते-हांफते सांस लेते हुए किनारे नहीं लग गया।

पौलुस को वह बात समझ आई जो हममें से हर एक को आनी चाहिए: परमेश्वर ने जीवन के तूफ़ानों पर हमें विजय दिलाने का वायदा किया हो, तब भी युद्ध तो हमें लड़ना ही पड़ेगा। परमेश्वर के पास हमारे जीवनों के लिए एक योजना है। उसे पूरा करने के लिए वह हमारी सहायता करेगा; परन्तु वह हमारे लिए वह नहीं करता जो हम स्वयं कर सकते हैं। यदि उसकी योजना के अनुसार अपने जीवन के लिए बर्फीले पानी में कूदकर तैरना आवश्यक है तो वह यह नहीं चाहता कि हम उससे कहें, ''लेकिन, प्रभु मुझे तो तैरना नहीं आता!'' वह हमसे आशा करता है कि हम जीवन बचाने वाला विश्वास ले लें और कूद जाएं! यदि आप जीवन के तूफ़ानों में जीवित रहना चाहते हैं, तो उस योजना को पूरा करने के लिए तैयार रहें!

शांति का अनुभव करें (27:44-28:2)

यदि अपने जीवन में हम परमेश्वर की इच्छा के आगे समर्पण करना चाहते हैं, तो हम उस शांति का अनुभव कर सकते हैं जिसे केवल वह ही दे सकता है। पानी में कूदकर किनारे तक पहुंचने के लिए संघर्ष करके उनमें से ''सब कोई भूमि पर बच निकले'' (27:44ख)। जब पानी में भीगा अन्तिम आदमी किनारे पर पहुंचा, तो उन्होंने दोबारा गिनती की और पाया कि 276 लोग ही अर्थात जो मूल संख्या थी (आयत 37) जीवित थे! ''जैसे घोषणा की गई थी, *किसी के* प्राण की हानि न हुई'' थी; यहां तक कि किसी के ''सिर का एक बाल भी'' न गिरा था (आयतें 22, 24)! ऐसा संयोग से नहीं हो सकता था; सांख्यिकी के विश्लेषण उसे असम्भव मानेंगे। फिर भी, यह सत्य था। परमेश्वर जब कोई वायदा करता है, तो आप अपना जीवन उस पर दांव पर लगा सकते हैं (देखिए 1 राजा 8:56)। यदि आपको उससे शांति नहीं मिलती, तो फिर किसी से भी नहीं मिलेगी!

टूटने वाले जहाज़ में से बचने वालों ने इधर-उधर देखकर पाया कि वे इटली में नहीं

पहुंचे थे: ''जब हम बच निकले, तो जाना कि यह टापू मिलिते कहलाता है'' (28:1)। परन्तु, परमेश्वर, उनकी निगरानी कर रहा था, सो लूका यह लिख पाया, ''और उन जंगली लोगों ने हम पर अनोखी कृपा की'' (आयत 2क)। हो सकता है कि एक मसीही को यह पता न हो कि उसकी यात्रा में कल क्या होगा, परन्तु वह उसको जानता है जो उसके साथ चलता है। इस कारण उसे ''हर हाल में शांति'' मिलती है।[26]

सारांश

यदि आप अपने जीवन में किसी तूफ़ान से जूझ रहे हैं, तो आपको भजन लिखने वाले के ये शब्द अपना आदर्श बना लेने चाहिए: ''हे मेरे प्राण, तू क्यों गिरा जाता है? और तू अन्दर ही अन्दर क्यों व्याकुल है?'' (भजन संहिता 42:5क); ''... परमेश्वर पर भरोसा रख, क्योंकि वह मेरे मुख की चमक और वह मेरा परमेश्वर है; मैं फिर उसका धन्यवाद करूंगा'' (भजन संहिता 43:5ख)।

इस पाठ में, मैंने तूफ़ान में जीवित रहने के लिए कई सुझाव दिए हैं: (1) तूफ़ान के आने की सम्भावना की अपेक्षा करें-ताकि तूफ़ान आप पर अचानक न आ जाए। (2) परमेश्वर के वायदों को व्यक्त करें-ताकि तूफ़ान आपको बिना तैयारी के न आ घेरे। (3) परमेश्वर की उपस्थिति का प्रदर्शन करें-ताकि तूफ़ान आपको असुरक्षित न कर पाए। (4) परमेश्वर की योजना को जल्दी से पूरा करें-ताकि तूफ़ान आपको अवज्ञाकारी न दिखाए। (5) परमेश्वर की शांति का अनुभव करें-ताकि तूफ़ान आपको बिना इनाम के न छोड़े।

जीवित रहने का रहस्य परमेश्वर में विश्वास बनाए रखना है-वह विश्वास जो पौलुस ने व्यक्त किया:

> परमेश्वर जिसका मैं हूं, और जिसकी सेवा करता हूं, उसके स्वर्गदूत ने आज रात मेरे पास आकर कहा। हे पौलुस मत डर; ... इसलिए, हे सज्जनो ढाढ़स बान्धो; क्योंकि मैं परमेश्वर की प्रतीति करता हूं, कि जैसा मुझ से कहा गया है, वैसा ही होगा (27:23-25)।

क्या वैसा ही हुआ जैसा पौलुस से कहा गया था? समुद्र किनारे अपने आपको आग से सेंकते उन 276 लोगों के बारे में विचार कीजिए और जानिए कि परमेश्वर अपने वचन को कैसे पूरा करता है! वे अपने तूफ़ान से बचकर निकल आए, और आप भी अपने तूफ़ान से बचकर निकल सकते हैं! इन शब्दों को अपने हृदय पर अंकित कर लें: ''मैं परमेश्वर की प्रतीति करता हूं, कि वैसा ही होगा जैसा मुझ से कहा गया है।'' इस प्रकार का विश्वास होने पर, आप किसी भी तूफ़ान का सामना कर सकते हैं![27]

विज़ुअल-एड नोट्स

इस पाठ में परमेश्वर के अनुग्रह और मनुष्य की ज़िम्मेदारी के सम्बन्ध का चित्रण मिलता है: परमेश्वर ने जहाज़ के सब लोगों को पौलुस के हाथ ''दे दिया,'' परन्तु पौलुस को अभी भी वह सब कुछ करने की आवश्यकता थी जो वह यह आश्वस्त करने के लिए कर सकता था कि वे किनारे सही सलामत पहुंच जाएं। अपनी क्लास को एक खाली चैक दिखाइए। हर किसी से कहिए कि वह मान ले कि आपने एक बहुत बड़ी राशि (जो उसने कमाई नहीं) *देते हुए,* उसके नाम चैक काट दिया है। परन्तु, जब उसे चैक मिल गया, तो उसके लिए उस उपहार का लाभ उठाने के लिए चैक का भुगतान करवाकर धन का इस्तेमाल करना ज़रूरी होगा। इसी प्रकार, उद्धार भी एक उपहार है; परन्तु इस उपहार का लाभ लेने के लिए हमारे लिए परमेश्वर की आज्ञा माननी (अर्थात वह करना जो हम कर सकते हैं) ज़रूरी है।

प्रवचन नोट्स

जिस विश्वास (27:23-25) ने पौलुस को तूफ़ान में जीवित रखा उसे हम निम्न प्रकार से संक्षिप्त कर सकते हैं: (1) मैं परमेश्वर की उपस्थिति को (''मेरे सामने खड़ा'') पहचानता हूं; (2) मैं परमेश्वर की सम्पत्ति हूं (''जिसका मैं हूं''); (3) परमेश्वर ने मुझे एक उद्देश्य दिया है (''जिसकी मैं सेवा करता हूं''); (4) परमेश्वर ने मुझे एक वायदा दिया है (''तुझे कैसर के सामने खड़ा होना अवश्य है'')।

''चार लंगरों'' (27:29) के आकस्मिक उल्लेख ने प्रवचन देने वालों को आकर्षित किया हुआ है। अपनी खोज में मुझे चार आत्मिक ''लंगरों'' पर बहुत से प्रवचन मिले जो हमें चट्टानों की ठोकर से बचाए रख सकते हैं। शास्त्र में केवल एक ही आत्मिक लंगर अर्थात ''आशा'' (इब्रानियों 6:19) का उल्लेख होने के कारण, सूचियां बहुत ही काल्पनिक हैं। लॉयड ओगिल्वी का सुझाव अति संवेदनशील लगता है। उसने कहा, ''शायद चट्टानों से दूर रहने के लिए आपके पास अपने लंगर हैं। ... उन *चार लंगरों की सूची देना जिन्होंने आपके लिए काम किया* ... बहुत ही कठिन है [अत:] लोगों को उनके [अपने] लंगर पहचानने के लिए कहें।''[28]

पाद टिप्पणियां

[1]इस पाठ में मेरे मुख्य पांच प्वाइंट ''हाउ टू डिफ़ीट द डार्कनेस'' शीर्षक से एक टीवी सरमन में जैक ग्राहम द्वारा दिए तीन सुझावों से लिए गए थे। [2]आम तौर पर प्रभु स्वयं पौलुस को दर्शन देता था। यीशु के स्थान पर एक स्वर्गदूत को शायद इसलिए भेजा गया था क्योंकि पौलुस के साथ जहाज़ में यात्रा करने वाले मूर्तिपूजक साथियों को ''यीशु ने मुझसे कहा'' से अधिक ''एक स्वर्गदूत ने मुझसे कहा'' आसानी से

समझ आ जाना था। परन्तु, आशा का संदेश मूलत: वही था (देखिए 18:9, 10; 23:11)। [3]इस संदेश में यीशु के पिछले आश्वासन में एक नई टिप्पणी जुड़ गई: यीशु ने कहा था कि पौलुस रोम में अवश्य जाएगा (23:11); स्वर्गदूत ने कहा कि रोम में पौलुस को कैसर के सामने खड़ा होना होगा। [4]परमेश्वर ने जहाज़ के सब लोगों को पौलुस को इस अर्थ में नहीं ''दिया'' था कि वे सभी मसीही बन जाएंगे, बल्कि इस अर्थ में दिया था कि उनके प्राणों की कुछ हानि न होगी। एफ. एफ. ब्रूस ने टिप्पणी की, ''इनसानी समाज को इस बात का बिल्कुल विचार नहीं है कि परमेश्वर के अनुग्रह से धर्मी पुरुषों तथा स्त्रियों के लिए यह कितना कर्जदार है'' (द बुक ऑफ ऐक्ट्स, द न्यू इन्टरनेशनल कमैन्ट्री ऑन द न्यू टैस्टामेन्ट, rev. ed.)। अन्य उदाहरणों के लिए कि परमेश्वर का भय मानने वाले लोग नास्तिक लोगों को जीवित रखने में कैसे सहायक होते हैं, देखिए उत्पत्ति 18:26-32; 30:27; 39:5. [5]देखिए भजन संहिता 34:18; 145:18; यशायाह 41:10; 43:1-5; रोमियों 8:38, 39. [6]इसे यूनान तथा इटली के बीच अद्रिया सागर न समझें। प्राचीन लेखकों के अनुसार, ''अद्रिया समुद्र'' भूमध्य सागर के पूर्वी केन्द्रीय भाग का एक नाम था। [7]थाह लेने के लिए लगभग छह-छह फुट पर गांठे पड़ी भारी रस्सियों का इस्तेमाल किया जाता था। [8]उन्होंने सम्भवत: अधिकतर लंगरों का प्रयोग पथरीली जगहों पर पड़ने से बचने के लिए किया। [9]उनके लिए जहाज़ में ठहरने के और भी कारण होंगे। शायद परमेश्वर की प्रतिज्ञा कि ''किसी के प्राण की हानि न होगी'' (आयत 22) से उन्होंने अनुमान लगाया कि सभी इकट्ठे रहें। [10]अगले दिन वे चाहते होंगे कि किनारे पर पहुंचने के लिए किश्ती का इस्तेमाल करें, परन्तु, उनके इस कार्य से उसमें रुकावट पड़ गई।

[11]शरीर को मजबूत करने के विचार को बढ़ाने के लिए यह सही जगह हो सकती है। मेरा अनुभव यह रहा है कि गंभीर भावनात्मक उथल-पुथल सह रहे लोगों को आम तौर पर शारीरिक समस्याएं होती हैं जिनसे उनकी भावनात्मक स्थिति पर प्रभाव पड़ता है। [12]उन्होंने थोड़ा बहुत तो खाया होगा परन्तु पेट भर भोजन उन्हें नहीं मिला होगा (पिछले पाठ में आयत 21 पर नोट्स देखिए)। पौलुस के शब्दों का अर्थ उसी प्रकार लेना चाहिए जैसे कोई मां अपने बच्चे को भोजन को हाथ भी न लगाने पर डांटकर कहती है: ''तूने अभी तक एक ग्रास/कौर भी नहीं खाया!'' सुझाव दिया गया है कि जहाज के चालक दल के मूर्तिपूजक सदस्य तथा यात्री अपने-अपने देवताओं को प्रसन्न करने के लिए उपवास रखे हुए थे, परन्तु शास्त्र में ऐसा कोई संकेत नहीं है। [13]यह एक प्रसिद्ध मुहावरा था (1 शमूएल 14:45; 2 शमूएल 14:11; 1 राजा 1:52; लूका 21:18)। [14]यह प्रभु भोज नहीं, बल्कि एक सामान्य भोजन था। [15]लूका ने यह उल्लेख करने के लिए कि ''हम सब मिलकर जहाज़ पर दो सौ छिहत्तर जन थे'' आयत 37 तक प्रतीक्षा की। शायद उस समय किसी ने यह देखने के लिए कि नाश्ते के लिए कितना भोजन चाहिए या किनारे पर पहुंचकर हिसाब लगाने के लिए कि कोई रह तो नहीं गया सबकी गिनती की। [16]पौलुस से सीखकर हम भी सार्वजनिक स्थानों पर कुछ खाने के समय परमेश्वर को धन्यवाद दे सकते हैं! [17]यह उन कुछ एक अवसरों में से लगता है जब पारम्परिक जगह का सही स्थान बताया गया। बहुत से अधिकारी मानते हैं कि मालटा के उत्तर पूर्वी तट पर ''सेन्ट पॉल'ज़ बे'' अर्थात संत पौलुस की खाड़ी ही वह जगह है जहां पर पौलुस और दूसरे लोग किनारे पहुंचे थे। [18]''पाल'' स्टेयरिंग की तरह आगे धकेलने के लिए (जहाज़ की तरह नहीं जिससे मुख्य तौर पर धकेलने के लिए प्रयुक्त होता था) जहाज़ के आगे लगा होता था। [19]आमने-सामने से बहने वाले दो जबरदस्त समुद्रों से रेत और/या चट्टानें पानी के नीचे इकट्ठी हो गई थीं, जिसे नाविक देख नहीं पाते थे। मालटा में पारम्परिक ''सेन्ट पॉल ज़ बे'' ऐसी स्थितियां ही हैं। [20]''प्रेरितों के काम, भाग-3'' के पृष्ठ 47 पर प्रेरितों 12:19 पर नोट्स और ''प्रेरितों के काम, भाग-4'' के पृष्ठ 13 पर प्रेरितों 16:27 पर नोट्स देखिए।

[21]''शेर का निवाला''= शेर का भोजन। पिछले पाठ में प्रेरितों 27:1 पर नोट्स देखिए। [22]ऐसा कोई संकेत नहीं मिलता कि सूबेदार किसी और कैदी के बारे में चिन्तित था। दूसरे कैदियों के जीवन एक बार फिर पौलुस के कर्जदार थे। [23]शायद सूबेदार को सिपाहियों की योजना का अचानक पता चला और उसने उन्हें रोक दिया, या शायद सिपाहियों ने कैदियों की हत्या करने की अनुमति मांगी और यूलियुस ने ''न'' कर दी। बाद वाली बात अधिक सही लगती है। [24]सुझाव दिया गया है कि उसके पास कुछ ऐसे सिपाही थे

जो तैर कर आगे जा सकते थे, ताकि किनारे पर पहुंचने पर कैदियों को पकड़ सकें। [25]तीन बार जहाज़ के टूटने पर भी बच निकलने के कारण पौलुस ने उन्हें यह सुझाव दिया होगा। पौलुस सम्भवत: डूब चुके जहाज़ के कचरे को पकड़कर ''एक रात दिन ... समुद्र में'' काटकर भी बच गया था (2 कुरिन्थियों 11:25)। [26]देखिए 2 थिस्सलुनीकियों 3:16; भजन संहिता 29:11 भी देखिए; यूहन्ना 14:27; 16:33; रोमियों 1:7; 2:10; कुलुस्सियों 3:15. [27]यदि इस पाठ को प्रवचन के रूप में इस्तेमाल किया जाए, तो सुझाव नम्बर चार का निमन्त्रण दिया जा सकता है कि ''योजना को पूरा करें।'' कलीसिया से बाहर के पापी के लिए परमेश्वर की ''योजना'' है कि वह विश्वास करे, मन फिराए और बपतिस्मा ले (मरकुस 16:15, 16; प्रेरितों 2:38)। [28]लॉयड ओगिल्वी, द *कम्यूनिकेटर'ज़ कमैन्ट्री,* vol 5, ऐक्ट्स।